2.1

अध्याय – 2

सोनिया गाँधी का जीवन परिचय एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रवेश

2.1 सोनिया गाँधी का जीवन परिचय

2.2 सोनिया गाँधी का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रवेश

सोनिया गाँधी का जीवन परिचय

एंतोनियो माइनो का जन्म 9 दिसम्बर, 1946 को यूरोप के इटली में तुरिन से लगभग बारह मील की दूरी पर स्थित ऑरबैसनो (ओरबासानो) में माइनो परिवार में हुआ था। एंतोनियो अपने मध्यम वर्गीय माता–पिता की तीन संतानों में दूसरे नंबर की संतान हैं। पिता स्टीफनो माइनो तथा माता पॉओला माइनो का परिवार धार्मिक प्रवृत्ति का रहा है। स्टीफनो माइनो ने अपनी तीनो बेटियों अनुस्का, एंतोनियो एवं नाड़िया को लड़कों की तरह बड़े प्यार दुलार से बड़ा किया एवं तीनों को किसी भी स्थिति में बेहतर से बेहतर शिक्षा देने का प्रयास किया। एंतोनियो (सोनिया गाँधी) अपने माता पिता की दूसरे नंबर की संतान है।

एंतोनियो माइनो की प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव ओरबासानो से कुछ ही दूर स्थित गेवैना शहर के कॉन्वेंट ऑफ मारिया एस्टिलिएट्रिस कैथलिक स्कूल में हुई थी। अपने पिता स्टीफनो के मेहनती व अनुशासन प्रियता के सबसे अधिक गुण एंतोनियो ने ही ग्रहण किये। एंतोनियो बाल्यकाल में बड़ी शर्मीली और संकोची स्वभाव की बालिका थीं। चूंकि पिता रूसी संस्कृति से बेहद प्रभावित थे इसलिए उन्होने अपनी तीनों बेटियों को रूसी नाम दिये और रूसी संस्कृति और भाषा का ज्ञान भी कराया। एंतोनियो ज्यादा प्रतिभाशाली छात्रा नहीं थी और पढ़ाई में ज्यादा होशियार भी नहीं थी परंतु वह पढ़ाई में कभी पीछे भी नहीं रहीं। पढ़ाई के साथ खेलकूद में लड़कों के साथ सदैव बराबरी से रहती थीं और लड़कों के समान वह बराबरी से ही कार्य करती थी। जिसे देख माता–पिता बड़े प्रसन्न रहते। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् ऐतोनियो ने आगे की पढ़ाई के लिये माता–पिता के समक्ष अपनी इच्छा व्यक्त की और यह भी स्पष्ट किया कि वह बड़े होकर शिक्षिका बनना चाहती हैं परंतु माता पॉओला माइनो को यह पसंद नहीं था। मध्यम वर्गीय होने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति की वजह से माता चाहती थी कि वह अधिक आय वाला कार्य करे।[1] क्योंकि मध्यम वर्ग का सपना ही पैसा कमाना होता है। व्यक्ति चाहता है कि उसे सभी प्रकार की सुविधायें मिलें। एंतोनियो शर्मीली

स्वभाव के होने के साथ ही साथ गुस्सैल स्वभाव की लड़की थीं और वह लड़कों को मारने पीटने में जरा सा भी संकोच नहीं करती थीं उन्होंने बचपन में अपने एक मित्र जोस्टो मैफिओ की कई बार पिटाई की थी।

एंतोनियो स्कूली पढ़ाई समाप्त करने के बाद कॉन्वेट ऑफ मारिया ऑसिलियाट्रिस नाम के कालेज में पढ़ने चली गईं जो गांव से पन्द्रह किलोमीटर दूर थी। कालेज की पढ़ाई के बाद एंतोनियो अंग्रेजी भाषा का डिप्लोमा करने के लिये इंग्लैण्ड के केम्ब्रिज में गई।

मध्यमवर्गीय होने के साथ पिता स्टीफनो ने इतना पैसा अवश्य कमा लिया था कि वह अपनी बेटी को अंग्रेजी ज्ञान के लिए कैम्ब्रिज भेज सकें। एंतोनियो इंग्लैड में अकेली और अन्जान थी, क्योंकि पहली बार वह अपने माता–पिता और बहिनों से दूर विदेश गई थीं। वह इंग्लैंण्ड में एक अंग्रेज परिवार के यहां पेइंग गेस्ट के रूप में रही थीं। एंतोनियो तो सिर्फ अपने पैतृक ग्राम से अंग्रेजी ज्ञान हेतु विश्व प्रसिद्ध केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी गई थीं क्योंकि वह एक शिक्षिका बनना चाहती थी किसको मालूम था कि वह शांत स्वभाव वाली संकोची शर्मीली स्वभाव वाली लड़की एक दिन विश्व प्रसिद्ध नेहरू गाँधी परिवार की बहू बनेगी और समूचे विश्व की शिक्षिका बन जायेगी।[2]

एंतोनियो माइनो की राजीव गाँधी से मुलाकात :

इंग्लैड के केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में प्रवेश लेने के साथ ही साथ एंतोनियो को इटली के व्यंजनो का स्वाद याद आता था जिसके कारण वह उदास रहती थी। अपने देश के खान–पान की चाहत में एंतोनियो ने भी वर्सिटी नाम का रेस्तरां ढूंढ निकला था जिसमें उसे उसकी पसंद का भोजन मिल जाया करता था। हर रोज शाम को वर्सिटी नाम के रेस्तरां में केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी इकट्ठे होते थे। एंतोनियो भी यहां रोज आने लगी इन्हीं विद्यार्थियों में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का नाती और वर्तमान सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री का बड़ा बेटा राजीव गाँधी आया करते थे। राजीव गाँधी भी एंतोनियो की तरह शांत व शर्मीले स्वभाव के सुन्दर युवक थे।

इतने सारे विद्यार्थियों के बीच में एंतोनियो ने राजीव गाँधी को और राजीव गाँधी ने एंतोनियो को पहली नजर में ही अन्य से अलग कर लिया था। ऑख मिचौली का यह खेल चलता रहा क्योंकि एक दूसरे में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह आपस में बात कर सकें। एक दिन राजीव गाँधी ने अपना इरादा पक्का कर ऐसे दोस्त का सहारा लिया जो दोनो को जानता था वह जर्मन था जो संयोगवश इटालवी भाषा का ज्ञाता था। उसने दोनो के बीच राम सेतू का कार्य किया और इन दोनों की भाषा का उच्चारण कर आदान प्रदान कर मिलवा दिया यहीं से राजीव गाँधी और एंतोनियो का पहला और सच्चा प्रेम शुरू हुआ जो जिन्दगी भर के लिए एक दूसरे के हो गये।

राजीव गाँधी ने पत्र द्वारा अपनी माता श्रीमती इंदिरा गाँधी को एंतोनियो के बारे में सब कुछ बता दिया। श्रीमती इंदिरा गाँधी समझ गयीं क्योंकि उन्होंने भी फिरोज गाँधी से प्रेम विवाह किया था। श्रीमती गाँधी ने राजीव को भारत से पत्र लिखा कि मैं शीघ्र ही इंग्लैण्ड आकर एंतोनियो से मिलूंगी चूंकि श्रीमती गाँधी उस समय सूचना एवं प्रसारण मंत्री थीं और उन्हें इंग्लैण्ड में अपने स्वर्गीय पिता पंडित जवाहर लाल नेहरू पर लगी एक प्रदर्शनी का उद्घाटन करना था अतः श्रीमती गाँधी इंगलैड गयीं और प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् सीधे भारत के दूतावास पहुंचीं वहीं पर उन्होंने एंतोनियो से पहली मुलाकात की।[3]

एंतोनियों ने करबद्ध होकर इंदिरा जी को नमस्कार किया तो स्नेहवश श्रीमति इंदिरा गाँधी भी सोफे से उठकर खड़ी हो गईं। एंतोनियो ने झुककर इंदिरा जी के चरण स्पर्श किए। एंतोनियो को ऐसा करते देख इंदिरा जी का हृदय प्रसन्नता से अभिभूत हो उठा उन्होंने एंतोनियो को तुरंत अपने हृदय से लगा लिया। एंतोनियो शर्म संकोच के कारण इंदिरा जी के सामने चुप–चाप बैठ गईं। इंदिरा जी तुरंत समझ गईं कि वह कुछ डरी व संकोच के कारण नहीं बोल पा रही है अतः एंतोनियो की सभी आशंकाओं और भय को दूर करने के लिए इंदिरा जी बोली एंतोनियो मैं मॉ हूॅ मुझसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है मैं भलीभांति जानती हूॅ प्यार करने का मतलब क्या होता है।

श्रीमती इंदिरा गाँधी ने एंतोनियो को पहली मुलाकात में उपहार स्वरूप सुई–धागा दिया था। एंतोनियो जब श्रीमति इंदिरा गाँधी से मिलने भारतीय दूतावास गई थीं तो उसी समय उनके कपड़ो की किनारी की सिलाई उधड़ी हुई थी। इंदिरा जी ने देखा तो उन्होंने सुई धागा मंगवाया और अपने हाथों से उधड़े हुए कपड़ों की सिलाई करने लगीं। इंदिरा जी को ऐसा करते देख एंतोनियों को अपने आप पर विश्वास नहीं हो रहा था कि भारत के पूर्व प्रधान मंत्री की बेटी और वर्तमान में भारत सरकार की मंत्री यह महान हस्ती इतनी सरल भी हो सकती हैं। एंतोनियो मन ही मन श्रीमति इंदिरा गाँधी की सरलता, सौम्यता और महानता के आगे नतमस्तक हो गई। राजीव गाँधी और एंतोनियो भारतीय दूतावास से पार्टी में चले गए और अगली सुबह श्रीमति इंदिरा गाँधी भारत लौट गईं। कुछ दिनों बाद राजीव गाँधी ने इंग्लैण्ड से अपनी माता जी को एक पत्र लिखा।

'आपसे मिलने के बाद एंतोनियो में बहुत परिवर्तन आया है। बड़ी मुश्किल से वह आपसे मिलने हिम्मत जुटा पाई थी क्योंकि जब मैंने उसे आपके बारे में बताया तो वह बहुत डरी सी थी लेकिन आपसे मिलने के बाद उसका सारा डर दूर हो गया है वह आपको अपनी मॉ के रूप में देखकर दंग रह गई'[4] आपका राजीव

समय कितने जल्दी निकल जायेगा वह इन दोनों ने सोचा भी नहीं था सन 1966 में जब समर वेकेशन पर सभी विद्याथ्री अपने–अपने देश लौटने लगे तो एंतोनियो भी अपने वतन लौटने की तैयारी करने लगी क्योंकि उसका अंग्रेजी का डिप्लोमा पूरा हो गया था। यह दोनों के बिछड़ने की कल्पना मात्र से ही दुखी थे क्योंकि एंतोनियों को अब दुबारा लौटकर कैंम्ब्रिज नहीं आना था अंततः भारी मन से वे एक दूसरे से विदा हुए। राजीव ने भारत लौटकर सफदरजंग फ्लाइंग क्लब ज्वाइन कर विमान उड़ाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। एंतोनियो अपने माता–पिता की लाड़ली बेटी थी और अपने जीवन में घटित होने वाली हर घटना का वर्णन अपनी माता से करती थी और अपनी माता से कोई बात छिपाती नहीं थी। उसने राजीव से मुलाकात के बारे में अपनी माता को साफ–साफ बता दिया और यह भी कह दिया कि राजीव गाँधी ही मेरी पसंद है। माता, पुत्री की सारी भावनाएं समझ गईं

और मौका मिलते ही सारी बातें पिता स्टीफनों को बता दीं यह सब सुनकर पिता एकदम पुत्री एंतोनियो पर क्रोधित हो उठे और ऐसा होना भी स्वाभाविक है अतः पिता के अस्वीकार के प्रति वे कुछ भी न कह सकीं।

यद्यपि यूरोपियन युवतियाँ अत्यधिक स्वच्छ और स्वतंत्र विचारों की होती हैं किन्तु एंतोनियो माइनो तो मानो भारतीय संस्कृति में पली बड़ी हुई हों क्योंकि वह यूरोपियन युवतियों से एकदम अलग और भारतीय सभ्यता संस्कारों से परिपूर्ण थीं अतः ईश्वर पर विश्वास रख पिता की आज्ञा का पालन अपने अस्वीकार मन से करने लगीं।[5]

राजीव गाँधी और एंतोनियो माइनो को बिछड़े 6 माह से भी अधिक हो गए थे एंतोनियो इटली में रहकर अध्ययन कर रही थीं वहीं राजीव गाँधी भारत में विमान उड़ाने में महारत हासिल कर चुके थे उन्होंने विमान उड़ाने का लाइसेंस भी प्राप्त कर लिया था।

इतने दूर रहकर भी इन दोनों का प्रेम कम नहीं हुआ। एक साल बाद सन् 1967 को राजीव गाँधी अचानक इटली जा पहुंचे। इटली में सर्वप्रथम उन्होंने एंतोनियो के पिता स्टीफनो से मुलाकात कर उसका हाथ मांग लिया। स्टीफनों स्तब्ध रह गये क्योंकि कोई विदेशी अनजान उनकी लड़की का हाथ मांग रहा था। विदेशियों पर उन्हें बिल्कुल भी विश्वास नहीं था लेकिन राजीव गाँधी उनकी पुत्री से विवाह करने का संकल्प ले चुके थे। वे सोच रहे थे उनकी पुत्री भारत में अपना जीवन किस तरह गुजारेगी अतः उन्होंने राजीव गाँधी से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वे दोनों एक दूसरे से एक वर्ष अलग–अलग रहें और उसके बाद इस बारे में कोई फैसला करें कि क्या वह इकट्ठे जिंदगी गुजारना चाहेंगे।

राजीव गाँधी को अपने प्रेम पर विश्वास था और वह एंतोनियो से यह कहकर भारत लौट आये कि मेरा इन्तजार करना इस एक साल में वे दोनों एक दूसरे को और ज्यादा चाहने लगे। एक वर्ष बीतने के बाद राजीव गाँधी फिर इटली

गये अबकी बार स्टीफनो माइनो के पास कोई बहाना नहीं था और उन्होंने बुझे मन से दोनों को शादी की सहमति प्रदान कर दी।[6]

एंतोनियो माइनो से सोनिया गाँधी :

13 जनवरी, 1968 को एंतोनियो माइनो अपनी माता श्रीमती पॉओला माइनो, दोनों बहिनों व मामा मारियो प्रेडेबॉन के साथ भारतीय भूमि के दिल्ली स्थित पालम हवाई अड्डे पर कदम रखा। माइनो परिवार का स्वागत करने के लिये स्वयं राजीव गाँधी, संजय गाँधी, बालसखा अमिताभ बच्चन सहित अन्य मित्र शामिल थे।[7] एंतोनियो माइनो का भारत के प्रसिद्ध कवि श्री हरिवंश राय बच्चन का घर मायका बना यहीं से उनकी डोली उठी। 25 जनवरी, 1968 को एंतोनियो राजीव गाँधी की सगाई हुई और ठीक एक माह बाद 25 फरवरी को बसंत पंचमी के दिन दोनों युगल विवाह सूत्र के बंधन में बंध गये। ठीक इसी दिन इंदिरा गाँधी और फीरोज गाँधी का मिलन भी हुआ था।[8]

25 फरवरी 1968 को मेंहदी की रस्म बच्चन परिवार के घर संपन्न हुई और 1 सफदरजंग रोड के पीछे लॉन में शादी हुई। सिविल मैरिज सादे तरीके से हुई। एंतोनियो के पिता स्टीफनो माइनो ने शादी की मंजूरी मजबूरी वश दी थी इसी कारणवश वह इस शादी में शामिल नहीं हुए। कन्यादान एंतोनियो के मामा मारियो प्रेडेबॉन ने किया।

इन दोनों का विवाह बिल्कुल सादे तौर तरीके से हुआ था। विवाह में कुल 250 अतिथि ही मौजूद थे। इंडिया गेट के पास रात्रि भोजन की व्यवस्था की गई थी जिसमें 1000 मेहमान मौजूद थे। इस विवाह से श्रीमती इंदिरा गाँधी इतनी खुश थीं कि वह यह तक भूल गईं थीं कि वे भारत की प्रधानमंत्री हैं। विवाह के बाद एंतोनियो माइनो को **सोनिया गाँधी** नाम दिया गया और इसी सोनिया गाँधी ने आगे चलकर नेहरू गाँधी परिवार की परम्परा को यथावत् रखा। रिश्तेदारों के इटली वापिस चले जाने के बाद सोनिया गाँधी अपने आपको बिल्कुल अकेला महसूस करने लगीं लेकिन इंदिरा गाँधी ने राजीव गाँधी को हिदायत दी कि वह बहू सोनिया गाँधी को बिल्कुल अकेला न छोड़े। राजीव गाँधी ने भी सोनिया गाँधी का वखूबी ध्यान रखा। सन् 1969 में सोनिया गाँधी गर्भवती हुईं। राजीव गाँधी को तो मानो

सभी खुशिया मिल गई हों परंतु सोनिया गाँधी का एकाएक गर्भपात हो गया, सोनिया गाँधी विचलित हो गई और उन्होंने सारा दोष योगाचार्य धीरेन्द्र ब्रह्मचारी को दिया क्योंकि वे ही उन दिनों सोनिया गाँधी को योग सिखाया करते थे लेकिन सोनिया गाँधी की ईश्वर ने फिर सुनी और 19 जून, 1970 को सोनिया गाँधी ने एक राजकुमार को जन्म दिया जिसका नाम राहुल रखा गया। इंदिरा गाँधी राजीव गाँधी का नाम राहुल रखना चाहती थीं किन्तु नेहरू जी के आगे उनकी एक न चली नेहरू ने राजीव का नाम रखा लेकिन कुछ वर्षों बाद इंदिरा गाँधी की मनोकामना पूरी हुई और उन्हें वह अवसर दूसरी बार मिला जब उन्होंने अपने पोते का नाम राहुल रखा। राहुल के जन्म से प्रधान मंत्री भवन में खुशियों का अंबार लग गया। इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी और माता सोनिया गाँधी को तो सब कुछ मिल गया था। राहुल की किलकारियां प्रधानमंत्री निवास में गूंज ही रहीं थीं कि सोनिया गाँधी ने 12 जनवरी, 1972 को एक राजकुमारी प्रियंका को जन्म दिया। प्रियंका के जन्म के बाद तो श्रीमती इंदिरा गाँधी सब कुछ भूल बच्चों की तरह बच्चा बन गईं और उन्हें बहुत लाड़–प्यार दिया मानो यह दोनों बच्चे उनके जिगर के टुकड़े हों। प्रियंका का जन्म स्वतंत्र बांग्ला देश के बाद हुआ था। इन दोनों बच्चों के जन्म के बाद सोनिया गाँधी पूरी तरह अपने परिवार के प्रति समर्पित हो चुकी थीं। पति राजीव गाँधी पायलट थे वह अपनी नौकरी पर जाते और सोनिया गाँधी अपने दोनों बच्चों की परवरिश करतीं और प्रसन्न रहतीं।[9]

राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी को राजनीति से कोई दिलचस्पी नहीं थी। सन् 1972 में पाकिस्तान पर विजय के पश्चात् लोकसभा चुनावों में इंदिरा गाँधी भारी बहुमत से विजयी हुईं और कांग्रेस की ही सरकार बनी। 1972 के लोकसभा चुनाव में 518 सीटों में से इंदिरा को साढ़े तीन सौ सीटें मिली लेकिन इंदिरा गाँधी के विपक्षी रहे रायबरेली के नेता राजनारायण ने इस चुनाव में इंदिरा गाँधी पर धांधली का आरोप लगाकर न्यायालय में मुकद्दमा दायर कर दिया। 12 जून, 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में श्रीमती इंदिरा गाँधी के रायबरेली चुनाव को अवैध घोषित कर दिया इस निर्णय के विरूद्ध संजय गाँधी ने दिल्ली गेट क्लब पर एक जनसभा का आयोजन किया। 20 जून, 1975 को यह सभा आयोजित की गई जिसमें एक लाख लोगों की भीड़ शामिल थी और यह पहला मौका था जब किसी

राजनीतिक कार्यक्रम में पूरा परिवार एक साथ सम्मिलित हुआ हो। राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी पहली बार जनसभा के सामने मंच पर संजय और इंदिरा गाँधी के साथ खड़े हुए थे।[10]

25 जून, 1975 को पूरे देश में आपातकाल लागू कर दिया गया। और इन्द्रकुमार गुजराल के स्थान पर विद्याचरण शुक्ल को नया सूचना प्रसारण मंत्री बनाया गया। यकायक आपातकाल लागू होने से देश की जनता अवाक रह गयी। इंदिरा गाँधी का सांम्प्रदायिक ताकतों ने जगह–जगह विरोध करना शुरू कर दिया और विपक्षी दलों ने उनके विरूद्ध तरह–तरह की अफवाहें फैलाईं।

श्रीमती इंदिरा गाँधी ने अपनी पराजय स्वीकार नहीं की और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के विपरीत इस्तीफा देने से इंकार कर दिया। उनके इस्तीफे को लेकर जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में जगह–जगह उपद्रव, हड़ताल, प्रदर्शन, आगजनी होने लगी जिससे देश में आंतरिक आपातकाल लागू कर दिया गया। देश में जगह–जगह इंदिरा शासन की बुराइयों का दौर शुरू हो गया। 26 जून, 1975 को राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद ने संविधान की धारा 14.21 और 22 के अन्तर्गत नागरिकों को न्यायालय का दरवाजा खटखटाने का अधिकार खारिज कर दिया। इसी तरह 8 जनवरी, 1976 को राष्ट्रपति फकरूद्दीन अली अहमद ने एक आदेश में आपातकाल के दौरान संविधान की धारा 19 के अंतर्गत नागरिकों के अधिकारों को समाप्त कर दिया। स्वतंत्रता के 7 अधिकारों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। सभी ने आपातकाल की आलोचना की। जनता ने भी इंदिरा गाँधी का विरोध करना शुरू कर दिया और जनता बदलाव के मूड में आ गई इसलिए 1977 के आम चुनाव में श्रीमती इंदिरा गाँधी की हार हुई। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला मौका था जब कांग्रेस पार्टी सत्ता से बाहर हुई। 24 मार्च, 1977 से 25 जुलाई, 1979 तक जनता पार्टी का शासन रहा। मोरारजी देसाई देश के प्रधानमंत्री बने लेकिन देश की जनता, जनता पार्टी से और ज्यादा परेशान हो गई क्योंकि यह सब कुर्सी की लड़ाई में शामिल थे। दो वर्ष में ही जनता पार्टी की सरकार गिर गई और कांग्रेस 'ई' के समर्थन से तीन महीने सत्ताईस दिनों तक चौधरी चरणसिंह देश के प्रधानमंत्री बने शीघ्र ही आम चुनाव हुये और 1980 में आम

चुनावों के बाद 14 जनवरी, 1980 को श्रीमती इंदिरा गाँधी पुनः देश की प्रधानमंत्री बनीं।[11]

23 जून, 1980 को एक विमान दुर्घटना में संजय गाँधी की मृत्यु हो गई। इंदिरा गाँधी को राजनीति में सहायता देने के लिये राजीव अचानक कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए और इंदिरा गाँधी की सहायता की, परंतु गाँधी परिवार अर्थात् राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी पर दुखों के बादल टूट पड़े जब 31 अक्टूबर, 1984 की सुबह प्रधानमंत्री निवास पर श्रीमती इंदिरा गाँधी के दो अंगरक्षकों सतवंत सिंह और केहर सिंह ने इंदिरा जी के सीने में गोलियॉ दाग दीं। अब तो राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी यहां तक कि कांग्रेस पार्टी अनाथ सी हो गई थी। इंदिरा युग का दुर्भाग्य पूर्ण अन्त हो गया और राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने राजीव गाँधी को प्रधानामंत्री की शपथ दिलाई।

प्रधानमंत्री की सहायक सोनिया गाँधी :

12 नवम्बर, 1984 को प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने पंजाब और असम को छोड़कर पूरे देश में आठवीं लोकसभा चुनाव की घोषणा कर दी। इन दो प्रदेशों को छोड़कर पूरे देश में आम चुनाव करवाये गये चुनाव में कांग्रेस 'इ' को 401 सीटें प्राप्त हुई। कांग्रेस की यह सबसे बड़ी जीत थी। 21 दिसम्बर, 1984 को राजीव गाँधी ने प्रधानामंत्री पद की शपथ ली।[12] राजीव गाँधी ने प्रधान मंत्री बनते ही देश का विकास किया और आधुनिक भारत के निर्माता बन गये। 1985 में कांग्रेस शताब्दी वर्ष मनाया गया जिसके उद्घाटन भाषण में 28 दिसम्बर, 1985 को उन्होंने बम्बई में घोषणा की कि – "कांग्रेस एक मजबूत भारत के निर्माण का संकल्प दुहराती है देश से गरीबी मिटाई जायेगी।"

उनका पांच वर्ष का शासन काल देश की प्रगति, वैज्ञानिक उपलब्धियों, आधुनिकीकरण, दृढ़ अर्थव्यवस्था, ग्रामीण विकास, अधिक रोजगार के अवसर और भारत की विदेश नीति का सर्वत्र प्रशंसा का युग है। उन्होंने अनेक देशों की राजनीतिक यात्राएं कीं। नेहरू के बाद राजीव गाँधी ही ऐसे प्रधानमंत्री थे जिन्होंने यह कीर्ति प्राप्त की। 1986–87 में प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री के रूप में जो बजट पेश किया गया वह बेजोड़ था जिसकी सर्वत्र सराहना हुई, ग्रामीण उद्योग, ग्राम विकास, पंचायती राज और स्थानीय निकायों के विकास पर पूरा ध्यान दिया गया।

राजीव गाँधी को विश्व के देशों ने विश्व का उभरता हुआ राजनीतिज्ञ बताया। एक बार जब वे कॉमनबेल्थ सम्मेलन बहामास और संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली न्यूयार्क के दौरे से लौट रहे थे तो उन्होंने सारी दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया जब उनका हवाई जहाज मास्को पर उतरा इससे अमेरिका को यह अंदेशा हुआ कि यह युवा प्रधान मंत्री रूस के नेता मिखाइल गोर्बाच्योब के बहुत निकट है। सोनिया गाँधी ने राजीव गाँधी को एक सहयोगी और सलाहकार के रूप में बखूबी साथ निभाया। 17 अगस्त, 1986 को मैक्सिकों में शांति और निःशस्त्रीकरण पर पांच महाद्वीपों की पहल पर उन्होंने अपने भाषण में कहा कि – मानवता को जीवित रहने का अधिकार है, आस्थाएं संजोने का अधिकार है, भविष्य की ओर कदम बढ़ाने का अधिकार है उन्होंने 1986 में दक्षिण अफ्रीका पर लंदन में लघु शिखर वार्ता तथा 1987 में बैंकोवर में एक सम्मेलन में भाग लिया।

नवम्बर, 1987 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ सार्क के काठमांडू अविधवेशन में सभा को संबोधित किया। भारत पाकिस्तान के मध्य शांति और मैत्री को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 16 जुलाई, 1989 को इस्लामाबाद गए। दिसम्बर, 1988 को राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी चीन की राजनीतिज्ञ यात्रा पर गये इस यात्रा से भारत चीन मैत्री भाव का एक नया अध्याय खुला। सोनिया गाँधी ने प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के साथ 11 अन्य देशों की राजनीतिक व गैर राजनीतिक यात्रायें कीं अतः सोनिया गाँधी को शुरू में राजनीति का अनाड़ी कहना गलत होगा। राजीव गाँधी ने भारत को 21वीं शताब्दी में शीघ्र पहुंचाने का लक्ष्य रखा था।[13]

राजीव गाँधी ने पांच वर्ष सफलतापूर्वक शासन की बागडोर संभाली और पद का गौरव बढ़ाया। 1989 में उनकी सरकार का कार्यकाल पूरा होने वाला ही था कि विपक्षी नेताओं ने बोफोर्स के मुद्दे को बहुत उछाला और किसी न किसी तरह उन्हें बदनाम करने की कोशिश की जनता को भाषणों द्वारा गुमराह किया गया जिससे जनता इन विद्रोहियों के जाल में फॅस गई।

सन् 1989 को राजीव गाँधी ने नौवीं लोकसभा के निर्वाचन की घोषणा कर दी लेकिन इस बार जनता ने किसी पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं दिया कांग्रेस 197 सीटें लेकर सबसे बड़ी पार्टी थी, किन्तु बहुमत न होने के कारण राजीव गाँधी

ने सरकार न बनाकर जनता के निर्णय का सम्मान करते हुए विपक्ष में बैठने का निर्णय लिया।

इस स्थिति में राष्ट्रीय मोर्चा के एक घटक जनता दल ने जो दूसरे क्रम में सबसे बड़ी पार्टी थी अन्य दलों के समर्थन से श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में 2 दिसम्बर, 1989 को सरकार बनाई लेकिन यह सरकार आपसी रंजिश का शिकार हुई। उपप्रधानमंत्री देवीलाल ने सरकार का और मंत्रियों का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया उन्होंने प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह तक को ढुलमुल और मेरूदंडहीन करार दिया। श्री वी.पी. सिंह ने गुस्से में 1 अगस्त, 1990 को चौधरी देवीलाल को पद से हटाते हुए मंत्रिमण्डल से बाहर कर दिया। परिणामस्वरूप 1 नवम्बर, 1990 को वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा। 10 नवम्बर, को चन्द्रशेखर ने कांग्रेस के सहयोग से देश के आठवें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली लेकिन चन्द्रशेखर और कांग्रेस की दोस्ती ज्यादा दिन तक न रह सकी और 13 मार्च, 1991 को लोकसभा भंग करके नया जनादेश प्राप्त करने की सिफारिश कर दी।[14]

25 फरवरी, 1991 को राजीव गाँधी–सोनिया गाँधी ने अपनी शादी की तेईसवी वर्षगांठ पर तेहरान के एक रेस्टोरेंट में रात्रि भोज किया और 16 अप्रैल, 1991 को कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजीव गाँधी ने कांग्रेस का चुनाव घोषणा पत्र जारी कर दिया और चुनाव प्रचार में लग गये। 16 मई को अपने चुनाव क्षेत्र अमेठी के दौरे पर गए राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी ने क्षेत्र का दौरा कर चुनाव प्रचार किया। सोनिया गाँधी कहतीं 'पति जी को वोट दीजिए' अपनी इस बहू को देखने क्षेत्र की जनता बेसब्री से इंतजार करती रहती। 18 मई, को राजीव गाँधी ने देशवासियों के नाम अपील प्रसारित की। देशवासियों और सोनिया गाँधी को नहीं मालूम था कि उनका यह आखरी सन्देश होगा। उन्होंने कहा क्षेत्रीय और संकीर्ण विचारों वाली पार्टियां हमारे सपनों के भारत का निर्माण कदापि नहीं कर सकती। 20 मई को सोनिया गाँधी के साथ राजीव गाँधी ने दिल्ली के निर्माण भवन स्थित मतदान केन्द्र पर मतदान किया और दिल्ली से भुवनेश्वर चले गये। अगले दिन कई चुनावी जनसभाओं को संबोधित करने के उपरांत् विशाखापट्टनम चले गए।[15]

21 मई को राजीव गाँधी चुनाव प्रचार हेतु मद्रास से लगभग 40 किलोमीटर दूर श्रीपैरम्बदूर में चुनाव सभा करने पहुंचे जहॉ पर रात 10.20 मिनिट पर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के पूर्व प्रधानमंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गॉधी की मानव

बम द्वारा हत्या कर दी गई। राजीव गाँधी की हत्या की खबर सुनकर सारा विश्व आश्चर्य चकित रह गया। विश्व के लगभग 50 देशों के राजनीतिज्ञों ने सोनिया गाँधी से संवेदना प्रकट की। सोनिया गाँधी ने जब यह खबर सुनी कि राजीव गाँधी अब इस दुनिया में नहीं रहे तो उन पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा इस बार दर्द ज्यादा था क्योंकि अबकी बार पति राजनीति की बलि वेदी पर चढ़े थे। पहले मॉ जैंसी सास की मृत्यु और अब पति। सोनिया गाँधी ने अपनी आंखों के सामने इंदिरा युग समाप्त होते देखा था फिर राजीव युग भी उन्हीं के सामने समाप्त हो गया। अब तो सिर्फ सहारा था बेटा राहुल और पुत्री प्रियंका का।

राजीव गाँधी की मृत्यु के पश्चात् राजनीति के चाटुकारों ने सोनिया गाँधी का दर्द न समझा और जा पहुंचे उनसे यह कहने की मेडम आप कांग्रेस अध्यक्ष का पद संभालें और प्रधानमंत्री भी आप ही बनें इन राजनीतिज्ञों को तो सिर्फ कुर्सी प्यारी थी। हॉलाकि 1989 की तुलना में कांग्रेस को 111 से बढ़कर 141 स्थान मिले थे और कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभर के आई। सोनिया गाँधी ने तो अपना सब कुछ देश पर न्यौछावर कर दिया था और स्वयं विधवा का दर्द झेल रही थीं। वह न तो राजनीति में पति को देखना चाहती थीं और न ही स्वयं कभी इस दलदल में आना चाहती थीं लेकिन राजीव गाँधी के भाई संजय गाँधी की आसमयिक मृत्यु हो जाने के कारण माता श्रीमती इंदिरा गाँधी अकेली पड़ गई। विपक्ष उन्हें घेरने लगी तो राजीव गाँधी पायलट की नौकरी छोड़कर अपनी माँ की मदद के लिये राजनीति में आये। सोनिया गाँधी ने पहले तो विरोध किया लेकिन बाद में उन्होंने राजीव गाँधी को सलाह दी कि इंदिरा जी की मदद करनी चाहिए। लेकिन 1984 में इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद सारी जिम्मेदारी राजीव गाँधी पर आ गई और उन्होंने अपनी जिम्मेदारियां बखूबी निभाई परंतु 1991 में उनकी भी हत्या कर दी गई जिससे सोनिया गाँधी अकेली पड़ गईं और राजीव गाँधी की हत्या के बाद उन्होंने राजनीति में एकाएक प्रवेश पर मना कर दिया क्योंकि वह पहले यह देखना चाहती थीं कि कांग्रेस में कौन कितना पार्टी का वफादार है और कौन कुर्सी का लालची और अवसरवादी है।

अतः सोनिया गाँधी ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं से हाथ जोड़कर मना कर दिया कि वह अभी पार्टी में नहीं आना चाहतीं। सोनिया गाँधी 1991 के बाद एकान्त वास में चली गईं और उन्होंने केवल अपने दोनों बच्चों की परवरिश को प्राथमिकता दी।

2.2

सोनिया गाँधी का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रवेश

सन् 1980, 1984 और 1991 में सोनिया गाँधी उनके परिवार तथा राष्ट्र पर आये विपदाकाल में भी नेहरू वंश की महानता और गरिमा के अनुरूप हिमालय की तरह अड़िग खड़ी रहीं। सन 1991 में तो सोनिया गाँधी का सब कुछ छिन गया था फिर भी वह शांत हिमालय की तरह सब कुछ देखती रहीं। जब राजनीतिज्ञों ने राजीव गाँधी की मृत्यु के पश्चात् कांग्रेस पार्टी की अध्यक्षता और नेतृत्व का प्रस्ताव उनके सामने रख दिया तो दुखभरी सोनिया गाँधी ने चुपचाप यह प्रस्ताव नामंजूर कर दिया और स्वर्गीय पति की यादों में खो गई। उनके निजी शोक और भविष्य की चिंताओं को कोई नही समझ सका क्योंकि राजनीतिक जीवन के दुष्परिणाम वे एक दशक से देख रही थीं जिसका नतीजा पूरे परिवार को भुगतना पड़ा। "शांति के देवदूत वृहद का पूरा परिवार, वंश, जाति को उनके सामने ही समाप्त कर दिया गया था फिर भी वे अंत समय तक महान वीरांगना व शालीनता का जीवन जीती रहीं। सोनिया गाँधी को भी समझने के लिए बड़ी पैनी दृष्टि की आवयकता है।"[16]

सोनिया गाँधी की राजनीति से इस विमुखता को देखते हुये 29 मई, 1991 को कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति की ओर से श्री पामुलपर्ति वेंकट नरसिंम्हा राव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के 79वें अध्यक्ष चुने गये। पी.वी. नरसिंम्हा राव शांत स्वभाव, स्वच्छ छवि व इंदिरा गाँधी और राजीव गाँधी के विश्वासपात्र थे। उन्होंने अपना लम्बा राजनीतिक सफर तय किया था साथ ही वे 'इंदिरा सरकार' और 'राजीव सरकार' में कई महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री रहे थे उनके नाम पर कांग्रेस कार्यकारिणी ने अपनी सहमति प्रदान कर दी। 1991 के लोकसभा चुनाव की कुल 511 सीटों में से 504 स्थानों के परिणाम घोषित हुए। कांग्रेस को 224 स्थान मिले और कांग्रेस से संबंधित पार्टियां 11 स्थानों पर जीती कुल मिलाकर कांग्रेस के

240 सदस्य थे जबकि विपक्षी बीजेपी को 119 स्थान मिले। 21 जून, 1991 की श्री पी.वी. नरसिंम्हा राव ने स्वतंत्र भारत के नौंवे प्रधानमंत्री की शपथ ली।[17]

राजीव गाँधी की मृत्यु के पश्चात् सोनिया गाँधी ने सन् 1991 से स्वयं राजनीति से प्रत्यक्ष तौर पर दूर रहने की भरपूर कोशिश की यदि सोनिया गाँधी चाहतीं तो वह भी उन अमरवेल जैसे परजीवियों की बातों में आ जातीं जिन्होंने उनके पति के कैरियर को तबाह कर दिया था क्योंकि भारत की राजनीति अवसरवादिता की राजनीति है। व्यक्ति केवल कुर्सी की राजनीति करता है। सोनिया गाँधी ने भी ऐसे स्वार्थी, राजनीतिज्ञों के इरादों को समझ लिया था। सोनिया गाँधी को स्पष्ट हो गया था कि राजीव गाँधी की मृत्यु के उपरांत कांग्रेस पार्टी में गुटबाजी और कुर्सी की लड़ाई शामिल हो चुकी है। सोनिया गाँधी समझती भी क्यों न आखिर उन्होंने 1968 से 1991 तक यही सब कुछ तो देखा था कि किस प्रकार राजनीति में कुर्सी हासिल की जाती है। कुछ नेता सोनिया गाँधी के प्रति अपनी संवेदनाऐं प्रकट करनें आये। संवेदना प्रकट करना तो एक बहाना था वह तो सिर्फ यह जानने आये थे कि क्या मेडम अध्यक्ष बनेंगी और यदि नहीं तो थोड़ा बहुत आर्शीवाद सोनिया जी का मुझे प्राप्त हो जाये जबकि सोनिया गाँधी ने बड़ी विनम्रता से मना कर दिया था अब बारी थी उन प्रतिद्वंदियों की जो चेहरे के सामने सोनिया गाँधी को सोनिया जी कहकर संबोधित कर रहे थे और पीठ पीछे अपना मतलब निकाल रहे थे। आखिर इन सब चालों को सोनिया गाँधी क्यों न समझतीं वे इतनी नसमझ तो नहीं हो सकतीं थी कि वह इन राजनीतिज्ञों की राजनीति को न समझ सके।[18]

अन्ततः कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के वरिष्ठ नेता प्रणव मुखर्जी ने प्रस्ताव रखा कि क्यों न नरसिंम्हाराव को कांग्रेस अध्यक्ष पद पर बैठा दिया जाये। सभी ने एकमत होकर नरसिंम्हाराव को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का 79वां अध्यक्ष निर्वाचित किया।

सोनिया गाँधी ने 1991 में अध्यक्ष बनने से साफ मना कर दिया और उन्होंने कई समाज कल्याण के कार्य करना प्रारंभ कर दिये। ऐसा नहीं है कि वह बिल्कुल गुमनाम हो गईं हों उन्होंने पति राजीव गाँधी की याद में कई सामाजिक संस्थानों

की स्थापना की और उन संस्थानों द्वारा गरीब, अपंगों, असहायों, बेरोजगार युवाओं, शिक्षा प्रसार, गरीब विद्यार्थियों की मदद, शिक्षित युवाओं को रोजगार, सामाजिक समस्याओं आदि को लेकर सन् 1991 में राजीव गाँधी के नाम पर विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की और स्वयं सोनिया गाँधी इन संस्थाओं को संचालित करने लगीं। सोनिया गाँधी ने कभी नहीं सोचा कि वह आराम की जिंदगी जियें। उन्होंने नेहरू गाँधी परिवार से यही शिक्षा ग्रहण की थी कि अपना जीवन दूसरों की सेवा में लगाने से आनंद मिलेगा। और देश की सेवा में यदि प्राणों की बलि बेदी पर भी चढ़ना पड़े तो पीछे मत हटो।

सोनिया गाँधी कभी अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटीं और पति की मृत्यु के बाद उन्होंने यह साबित कर दिया कि राजनीति में आकर ही देश की सेवा नही की जा सकती है। राजनीति से हटकर भी समाज कल्याण के कार्य किये जा सकते हैं।

राजीव गाँधी फाउन्डेशन की स्थापना हेतु नरसिंम्हाराव ने सरकार में रहते हुए सोनिया गाँधी की मदद की और समय–समय पर जो बैठकें हुई उन बैठकों में सभी वरिष्ठ कांग्रेसी नेताअें ने भाग लिया और सोनिया गाँधी को कभी यह एहसास नहीं होने दिया कि वह अकेलीं है। सर्वप्रथम राजीव गाँधी नाम से राजीव गाँधी न्यास की स्थापना 1991 में की गई – 1. राजीव गाँधी न्यास महिलाओं और बच्चों की मदद करता है। 2. सन् 1992 में राजीव गाँधी समकालीन अध्ययन संस्थान की स्थापना की गई इसमें राजीव गाँधी के दृष्टिकोण से सार्वजनिक नीतियों का अध्ययन किया जाता है। सन् 1991 में सर्वप्रथम राजीव गाँधी न्यास के नाम से जिसकी स्थापना की गई उसका उद्देश्य साक्षरता, स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्रों में अपना योगदान देना था। 3. वीर भूमि और श्रीपेरम्बदूर स्मृति सप्रत्यय समिति भी 1991 में स्थापित की गई।

राजीव गाँधी के नाम से चल रही इन संस्थाओं द्वारा सोनिया गाँधी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहीं है और लगातार अपना योगदान दे रहीं है। इसके अलावा भी सोनिया गाँधी अन्य न्यास संस्थानों की अध्यक्ष है और इन संस्थानों की देखरेख वह स्वयं करतीं हैं इनके मार्गदर्शन में ही यह संस्थायें सामाजिक विकास के कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। जवाहर भवन न्यास को 1989 में स्थापित

किया गया, इंदिरा गाँधी स्मृति न्यास की स्थापना 1985 में की गई, जवाहर लाल नेहरू स्मृति संग्रहालय और पुस्तकालय 1985 में स्थापित किया गया यह समिति पंडित नेहरू के स्मृति चिन्हों की देखरेख के साथ ही गोष्ठियों और प्रदशिर्नियों का अयोजन करती है। जवाहर स्मृति निधि नेहरू अध्येता वृत्ति प्रदान करने के अलावा इलाहाबाद में आनंद भवन और स्वराज भवन की देखरेख करती है। इन विभिन्न संस्थानों की जिम्मेदारी अब सोनिया गाँधी पर है जो अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहीं है।

राजीव गाँधी फाउडेशन की स्थापना के लिये जब नरसिंम्हाराव सरकार ने कर्ज दिया तो विपक्षी दलों ने खूब बवाल मचाया और सोनिया गाँधी पर यह आरोप लगाया कि सोनिया गाँधी करोड़ों का कर्ज लेकर कहीं इटली न भाग जाये, परंतु कुछ ही समय बाद सोनिया गाँधी ने इन संस्थाओं की स्थापना कर सामाजिक कार्य करना प्रारंभ किया तो विपक्षी नेता शांत हो गये।

इस तरह सोनिया गाँधी ने राजनीति से अलग होकर नेहरू–गाँधी की परम्परा का निर्वाहन कर कभी असहायों को सहारा दिया तो 'कभी गरीबों की मदद की' अपंगों को चलने का रास्ता बताया तो शिक्षित बेरोजगारों को राजीव गाँधी फाउडेंशन की ओर से रोजगार दिया और कभी गरीब विद्यार्थियों की राजीव गाँधी के नाम से किताबों के लिये विभिन्न संस्थाओं को मदद दी। इन सब के बावजूद भी सोनिया गाँधी ने अपने आपको प्रसिद्धि से बचाया और 1991 से लगातार सामाजिक और लोकहित में अपना सहयोग किसी न किसी रूप में देतीं रहीं तथा विपक्षी पार्टियों का लगातार विरोध झेलती रहीं क्योंकि यदि कोई अच्छा कार्य भी करे तो उसे भी विरोध झेलना पड़ता है। यही सोनिया गाँधी के साथ हुआ। भाजपा के नेताओं ने लगातार उनका किसी न किसी रूप में विरोध किया यह सब कुछ सोनिया चुपचाप सहन करती रहीं।[19]

6 दिसम्बर, 1992 को जब बावरी मस्जिद गिराई गई तो उस दिन सोनिया गाँधी खुद को रोक न सकीं और राजीव गाँधी फाउन्डेशन के अन्य सदस्यों की सलाह को अस्वीकार कर फाउन्डेशन अध्यक्ष की हैसियत से बावरी मस्जिद गिराये जाने की कड़े शब्दों में निंदा की और कहा कि – 'राजीव और नेहरू–गाँधी परिवार

का सदस्य देश के धर्मनिरपेक्ष ढ़ांचे के साथ जुड़े हुए हैं और अगर राजीव गाँधी फाउन्डेशन अपनी आहत भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकता तो उनकी इस विरासत को धोखा देने के समान होगा' इससे यह स्पष्ट था कि सोनिया गाँधी देश में साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ थीं जो धर्म के नाम पर देश का बंटवारा और भाई–भाई की हत्या करवा रहा था। सोनिया गाँधी ने जब अपना बयान दिया तो इसकी भी परवाह नहीं की कि कांग्रेस की सरकार है, बल्कि नरसिंम्हाराव को भी फाउन्डेशन का ट्रस्टी होने के नाते फटकार सुननी पड़ी।[20]

सन् 1992 में सोनिया गाँधी और नरसिंम्हाराव के बीच मनमुटाव शुरू हो गया था, क्योंकि जिस गाँधी परिवार ने कांग्रेस के प्रति अपने प्रांणों की चिंता नहीं की और हंसते–हंसते प्रांण न्यौछावर कर दिये, उसी कांग्रेस की महासमिति ने सन् 1992 में नरसिंम्हाराव के होते हुए अपनी एक रिपोर्ट में स्वर्गीय राजीव गाँधी पर आरोप लगाया कि राजीव गाँधी के प्रधानमंत्रित्व काल में भाजपा फली–फूली है इसके अलावा नरसिम्हाराव सरकार द्वारा राजीव गाँधी हत्याकांण्ड की जांच के लिए गठित वर्मा आयोग और जैन आयोग की रिपोर्टों पर असंतोष जनक कार्यवाही एवं बोफोर्स तोप सौदे को लेकर राजीव गाँधी के नाम को उछाला गया।

6 दिसम्बर, 1992 को भाजपा और केन्द्र सरकार की मिलीभगत की चर्चा ने कांग्रेस की स्थिति को नाजुक कर दिया क्योंकि इससे मुसलमान और दलित कांग्रेस से अलग होने लगे, जिस कारण सोनिया गाँधी दुखी हो उठीं।[21] पार्टी के अंदर अंतःकलह के चलते कांग्रेस के परंपरागत मतदाता भी पार्टी से किनारा करने लगे। 24 अगस्त, 1995 को गाँधी परिवार के निर्वाचन क्षेत्र अमेठी में सोनिया गाँधी ने जनसभा को संबोधित करते हुए राजीव गाँधी हत्याकांण्ड की जांच में हो रही देरी में अपनी नाराजगी व्यक्त की तो वहां उपस्थित कांग्रेसी व अन्य लोग हैरान रह गये। इससे स्पष्ट हो गया कि राव सरकार की ढुलमुल नीतियां कांग्रेस को किस ओर ले जा रहीं हैं।[22] क्योंकि इस बार श्री नरसिंम्हाराव के अनिर्णयों से कांग्रेसजन त्रस्त थे इस समय कांग्रेस की स्थिति बड़ी विकट थी नेता अलग–अलग भाग रहे थे। इस विरोध का लाभ गैर–कांग्रेसी पार्टी उठा रही थीं और विपक्ष को तो नये मुद्दे मिल गये थे। कांग्रेस के असंतुष्ट नेताओं ने राजनैतिक प्रस्ताव पेश करते हुए

श्री नरसिंम्हाराव का विरोध किया। क्योंकि राव से श्री नारायण दत्त तिवारी, अर्जुनसिंह, श्री सत्यनारायण राव, श्री माधव राव सिंधिया असंतुष्ट थे इन मतभेदों ने विरोधी पार्टी को सक्रिय बना दिया। सन 1996 में हुए लोकसभा चुनावों का नेतृत्व श्री नरसिंम्हाराव कर रहे थे और उनके नेतृत्व में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को कुल 543 स्थानों में से मात्र 140 स्थान ही मिले थे जिससे कांग्रेस को 11वें लोकसभा चुनाव में भारी पराजय का मुह देखना पड़ा था। कांग्रेस की हार से कई साम्प्रदायिक और क्षेत्रीय ताकतें प्रबल हो उठीं। कांग्रेस को संसद में बड़े दल होने का सौभाग्य भी प्राप्त न हुआ।[23]

सोनिया गाँधी चुपचाप यह सब देखती रही जब कांग्रेस के असंतुष्ट नेता श्री पी.व्ही. नरसिंम्हाराव की शिकायत करने 10 जनपथ पहुंचते तो वह चुपचाप उनकी सुनती। कांग्रेस के जो वरिष्ठ राजनीतिज्ञ थे, राव से अलग होने लगे जिससे राव अकेले पड़ गये क्योंकि राव के नेतृत्व के ढ़ीलेपन के कारण ही 1996 के लोकसभा चुनाव में भाजपा संसद में बड़े दल के रूप में उभरी थी जिसमें लोकसभा में सबसे बड़े संसदीय दल भाजपा के नेता को सरकार बनाने का मौका प्राप्त हुआ और श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। यह भाजपा के लिये पहला मौका था किन्तु 13 दिन में ही वाजपेयी की सरकार गिर गई। उसके बाद देवगोड़ा और गुजराल की तेरह छोटे–छोटे दलों की अल्पसंख्यक संयुक्त मोर्चा सरकार सत्ता में आई। श्री पी.व्ही. नरसिंम्हाराव ने पार्टी विरोध और ग्यारहवें लोकसभा चुनाव की हार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए सितम्बर, 1996 में कांग्रेस अध्यक्ष पद से अपना त्याग पत्र दे दिया।[24]

कांग्रेस अध्यक्ष पद से राव द्वारा इस्तीफा देने के बाद एक बार फिर अध्यक्ष पद की दौड़ में नेता शामिल हो गये। 23 सितम्बर, 1996 को अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक हुई। बैठक में सर्व सम्मति से कार्य समिति ने बिहार के दलित नेता श्री सीताराम केसरी को कांग्रेस अध्यक्ष पद की बागडोर सौंप दी। इंदिरा–राजीव गाँधी के समय में वर्षों से फतह का तिरंगा फहराती हुई कांग्रेस इस समय भागती हुई सेना की तरह लग रही थी क्योंकि नरसिंम्हाराव ने पराजय कबूल कर ली थी जिसके कारण उनकी दिशा अनिश्चित हो गई। इसके बाद सीताराम

केसरी ने कुछ समय के लिये सेनापति का चोला ओढ़कर इस फौज की कमान संभालने का संकल्प लिया। 81 वर्षीय श्री केसरी ने अध्यक्ष पद ग्रहण करते हुए शुरू में जिस तरह राजनैतिक चालें चलना प्रारंभ कीं तो सभी भौंचक्के रह गये। श्री पी.व्ही. नरसिंम्हाराव द्वारा नियुक्त पदाधिकारियों को केसरी ने चलता कर दिया। सीताराम केसरी ने 1996 से 1997 तक कांग्रेस पार्टी को राजनीति में काफी उठा–पटक की और एच.डी. देवगौड़ा और इन्द्रकुमार गुजराल की सरकारों को समर्थन दिया और फिर सत्ता से बाहर का रास्ता भी दिखा दिया।[25]

28 अगस्त, 1997 को न्याय मूर्ति मिलाप चन्द्र जैन ने राजीव गाँधी हत्याकांण्ड पर अपनी 17 खंडों और 5000 पृष्ठों की रिपोर्ट गृहमंत्री इन्द्रजीत गुप्त को दी। संसद का शीतकालीन सत्र 19 नवम्बर से प्रारंभ था। 18 नवम्बर को जैन आयोग की रिपोर्ट आई। रिपोर्ट के कुछ अंश एक पत्रिका में छप जाने से राजनीति में हड़कम मच गया। 9 नवम्बर, 1997 को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक हुई। जैन आयोग की रिपोर्ट को लेकर कांग्रेस दो खेमों में आमने–सामने आ गई। एक केसरी खेमा और दूसरा सोनिया गाँधी समर्थक। रिपोर्ट में द्रमुक को राजीव गाँधी हत्या के लिए दोषी ठहराया था अतः कांग्रेस चाहती थी कि गुजराल सरकार द्रमुक को सत्ता से बाहर करे किन्तु इन्द्रकुमार गुजराल ने साफ मना कर दिया जिससे कांग्रेस ने समर्थन वापिस ले लिया। यहां स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि कांग्रेस दो खेमों में इसलिए आमने सामने हो गई थी कि केसरी सत्ता के लालची हो गये थे और वे जैन आयोग रिपोर्ट को ज्यादा महत्व नहीं दे रहे थे जबकि अन्य कांग्रेसी इसे महत्व दे रहे थे। अंत में केसरी को झुकना पड़ा और समर्थन वापिस ले लिया जिससे सरकार गिर गई।

देश की आजादी के लिए प्राण न्यौछावर करने वाली संस्था कांग्रेस जो अपनी शक्ति व आदर्शों के लिए प्रसिद्ध है उस संस्था की विश्व में अपनी एक पृथक छवि है जो धूमिल होने लगी थी एक बार फिर कांग्रेस के पास कुशल नेतृत्व का अभाव था जिससे कांग्रेस की चमक धीमी पड़ने लगी क्योंकि सीताराम केसरी अब प्रधान मंत्री पद पाने के सपने देख रहे थे।

इतना सब हो जाने के बाद सोनिया गाँधी कैसे चुप बैठ पाती कि एक ओर उनके परिवार ने अपने रक्त से जिस पार्टी को पाला उसका विस्तार किया। कुछ अवसरवादी उसी पार्टी की छबि को धूमिल करने में लगे हैं। सोनिया गाँधी के लिये फर्ज साफ था कि 113 वर्ष पुरानी कांग्रेस पार्टी की परंपरा और प्रतिष्ठा पर कोई दाग न आने देना। नेहरू–गाँधी परिवार ने जिस निःस्वार्थ भाव से अपना बलिदान दिया और कांग्रेस पार्टी को बनाया उस पार्टी को भला सोनिया गाँधी कैसे अपनी आंखों के सामने मिटते देख सकती थी। क्योंकि इसी पार्टी के लिये सास और फिर पति ने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया। कांग्रेस नेता जब 10 जनपथ पहुंचे तो सोनिया गाँधी ने स्पष्ट कर दिया कि वह शीघ्र ही कांग्रेस पार्टी में निःस्वार्थ भाव से आयेंगी इसके लिए चाहे अपने आपको न्यौछावर करना पड़े। सोनिया गाँधी ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता लेने से पहले यह स्पष्ट कर दिया था कि मैं पद के लिए राजनीति नहीं बल्कि देशहित और पार्टी हित के लिए राजनीति में आऊंगी। सीताराम केसरी ने 8 मई, 1997 को श्रीमती सोनिया गाँधी को कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता दिलाई। यह राजीव गाँधी के बाद पहला अवसर था जब कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता अपने आपको गौरान्वित महसूस कर रहा था और एक दूसरे के गले मिलकर बधाइयां दे रहा था। सारे देश में विशेषकर कांग्रेस में खुशी की लहर फैल गई। दिल्ली से लेकर कन्याकुमारी तक कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे को बधाइयां दीं। सोनिया गाँधी के कांग्रेस में प्रवेश के साथ ही कुछ नेताओं ने उनसे कांग्रेस अध्यक्ष बनने का आग्रह किया यहां तक कि तत्कालीन अध्यक्ष केसरी ने बयान दिया कि – "यदि सोनिया जी कांग्रेस अध्यक्ष बने तो मैं पार्टी अध्यक्ष पद से तुरंत इस्तीफा देने को तैयार हूँ" किन्तु त्याग की इस देवी ने स्पष्ट किया कि वह अभी अध्यक्ष पद स्वीकार नहीं कर सकतीं क्योंकि उनका लक्ष्य सत्ता हासिल करना नहीं है बल्कि पार्टी और देश की सेवा करना है।[26]

सन् 1997 में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में कलकत्ता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सोनिया गाँधी के प्रवेश से लगा मानो कोई उत्तराधिकारी अपनी विरासत का सांकेतिक निरीक्षण कर रहा हो इससे कांग्रेस के स्वर्णिम युग की यादें ताजा हो गई जब किसी समय इसी स्टेडियम में पंडित जवाहरलाल नेहरू भीड़ को आकर्षित कर लिया करते थे। सोनिया गाँधी के कांग्रेस अधिवेशन में प्रवेश से अब उनके दिन पूरे हुए यह मान

लेने वाले विचलित और कुछ हद तक दिशाहीन नेताओं में अचानक जान आ गई हो। सोनिया गाँधी के आगमन से पहली बार अधिवेशन जीवंत हो उठा। अपने आंसुओं या खुशी पर काबू पाने की निष्ठावान कांग्रेसियों ने भरसक कोशिश की। कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम केसरी ने कहा 'सोनिया जी मेरी गुजारिश है कि आप कांग्रेस से रिश्ता बरकरार रखिए इसे तोड़िए नहीं बाकी आप पर निर्भर है।' श्री केसरी ने आगे कहा कि मैं सोनिया जी से अनुरोध करता हूँ कि वे पार्टी का मार्गदर्शन करें।[27]

सोनिया गाँधी अपने स्वभावनुसार कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस सदस्य के नाते कांग्रेस महासमिति के आम सदस्यों के बीच जाकर बैठ गई सोनिया गाँधी के अधिवेशन में आगमन से कांग्रेस में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। आलोचकों ने कहा कि सोनिया गाँधी का कांग्रेस में प्रवेश स्व. राजीव गाँधी को बोफोर्स घोटाले से बचाने के लिए हुआ तो किसी ने कहा कि राजीव गाँधी की हत्या सन् 1991 की मिलाप चन्द्र जैन आयोग की रिपोर्ट आने से असंतुष्ट होकर कांग्रेस की सदस्यता ली तो किसी ने कहा कि सोनिया गाँधी कांग्रेस व कांग्रेस के ही कुछ नेताओं को सबक सिखाने के मकसद से कांग्रेस में आईं। अनुसंधान द्वारा पूरी जानकारी और सत्यता जानने के बाद यह स्पष्ट किया जा रहा है कि सोनिया गाँधी का कांग्रेस मे प्रवेश किसी के प्रति बदले की भावना से नहीं और न ही वे सत्ता हथियाने की भावना से बल्कि पार्टी हित व देश हित में था। यदि वह सत्ता की लालची होतीं तो सन् 1991 में ही पार्टी पद हथिया लेतीं। 6 वर्ष तक क्यों इंतजार करतीं। जिस तरह 1991 के बाद कांग्रेस में गुटबाजी का दौर शुरू हुआ देश में साम्प्रदायिक ताकतों ने धर्म के नाम पर राजनीति की और मारकाट करवाई। 113 वर्ष पुरानी कांग्रेस पार्टी में कुछ अवसरवादियों ने कई तरह से पार्टी में दुष्प्रचार किया तो सोनिया गाँधी को सोचने पर मजबूर होना पड़ा क्योंकि यही वह पार्टी है जिसके लाखों लोगों ने स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राणों की आहूति दी और भारत को स्वतंत्र करवाया तथा कांग्रेस का गौरव बढ़ाया। 1997 में सोनिया गाँधी ने कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस सदस्य के नाते अपना पहला भाषण दिया। उनका संदेश संक्षिप्त सीधा–साधा और पूरी तरह राजनैतिक था। सोनिया गाँधी ने कहा कि – "कांग्रेस अपने लक्ष्य से भटक गई है और इसका लाभ विपक्षी उठा रहे हैं। कांग्रेस को पुनः राजीव जी के आदर्शों के प्रति समर्पित करने की जरूरत हैं" इस संदेश के

साथ ही सोनिया गाँधी ने कांग्रेसियों की उम्मीद बड़ा दी जिससे यह स्पष्ट हो गया कि आने वाले वर्षों में सोनिया गाँधी की कांग्रेस को सख्त जरूरत है।[28]

4 दिसम्बर, 1997 को इन्द्रकुमार गुजराल की संयुक्त मोर्चा सरकार से कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम केसरी ने समर्थन वापिस लेते ही राष्ट्रपति के.आर. नारायणनन ने दिसम्बर, 1997 को ग्यारहवी लोकसभा भंग कर दी और 12वें मध्यावधि चुनाव की घोषणा कर दी। केसरी के संयुक्त मोर्चा सरकार से समर्थन वापिस लेते ही देश में राजनीतिक सरगर्मियां बढ़ गई और चुनावी तैयारियां शुरू होने लगी। आलोचकों ने कहा कि केसरी ने सोनिया गाँधी के दबाव में आकर सरकार गिरा दी स्थिति कोई भी रही हो लेकिन संयुक्त मोर्चा सरकार के प्रति कांग्रेसियों में विरोध उत्पन्न होने लगा था जिसका सीधा असर सीताराम केसरी की छवि पर पड़ने लगा था और इस समय सीताराम केसरी की छवि उतनी अच्छी नहीं थी कि वह कांग्रेस को सत्ता वापिस दिला सके और कांगेस की स्थिति मजबूत कर सके।[29]

अब कांग्रेस के सामने 12वें मध्यावधि चुनाव के लिए स्टारक प्रचारक की विकट समस्या थी सोनिया गाँधी के लिए यह कार्य बहुत महत्वपूर्ण था कि वह कांग्रेस नेताओं के पलायन को रोके। कांग्रेस को साम्प्रदायिक शक्तियों से गंभीर चुनौतियां मिल रही थीं क्योंकि पिछले वर्षों से सोनिया गाँधी खामोशी से देख रही थीं कि किस तरह कांग्रेस अध्यक्षों ने अपनी मनमानी कर पार्टी समर्थकों को दर किनार किया है। सीताराम केसरी का मकसद तो साफ थां कांग्रेस को जनता दल का अधिक स्वीकार्य संस्करण बना देना। यह जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गॉधी और राजीव गाँधी के मकसद से भिन्न था क्योंकि यह सैकड़ों वर्षों पुरानी पार्टी को मध्यमार्गी बनाना चाहते थे। अगर सोनिया गाँधी अपना राजनैतिक एजेडा लागू करने में देर करतीं तो कांग्रेस न केवल अप्रासंगिक हो जाती बल्कि वह अपनी पहचान खो बैठती। सोनिया गाँधी ने अध्यक्ष पद संभाले बिना ही कांग्रेस पार्टी के प्रचार एवं चुनाव स्टार के रूप में आते ही राजनीतिक गलियारों में हलचल मच गई क्योंकि सोनिया गाँधी ने इससे पहले भी साम्प्रदायिक ताकतों का किसी न किसी रूप में विरोध किया था अब तो जैसे भाजपा जैसी धर्म निरपेक्ष पार्टियों को भय सताने लगा। सोनिया गाँधी ने बिना अध्यक्ष पद धारण किये मई 1997 में ऊर्जा संचार कर दी।[30]